IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, May 2019
Impact Factor: 4.819

दलित साहित्य : जातिगत उत्पीड़न का जिन्दा दस्तावेज जूठन

डॉ. अजय कुमार बिन्द

असि. प्रो.

राजकीय महाविद्यालय नानौता, सहारनपुर

drajaybind@gmail.com

पूर्वी उत्तर प्रदेश में एक चर्चित कहावत है - *'जाके पाँव न फटे बिवाई, सो क्या जाने पीर परायी।'* दलित साहित्य को जानने से पहले, दलितों के विषय में सबसे पहले जानना जरुरी है की उनका रहन -सहन कैसा है, वे किस वातावरण में रहते है, कैसा कपड़ा पहनते हैं, कैसा खाते हैं और भी बहुत कुछ जो रोज की रोजमर्रा में करते हैं। मुझे वे दिन भी याद हैं कि उनको चारपाई और कुर्सी पर बैठने का हक़ भी नहीं था। उनको हमारे पूर्वजों नें जमीन पर बैठना शिखाया था। किसी के हाथ में झाड़ू थमा दिया गया..... उनकी पीढ़ियां आज तक झाड़ू ही लगा रही हैं। एक वो भी समय था कि दलितों को सुबह - शाम घर से निकलना वर्जित था क्यूंकि उस समय परछाई लम्बी होती थी....

और भी न जाने क्या क्या नियम पाबंदिया दलितों के ऊपर लगायी गयी थी, पढ़ने की तो कोई सोच ही नहीं सकता था।वो दौर भी देखे जब दिन भर बेगारी करायी जाती थी केवल चने -चबने पर। मजदूरी भला कौन मांगने की हिम्मत कर सकता था। वास्तव में दलित साहित्य वही हैं जिसने सब कुछ भोगा हैं, जिसने भोगा हैं वही सच्चा दलित साहित्य लिख सकता है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in